नवभारत टाइम्स, १ नवम्बर, १९८५ (५)

कैंसर का आयुर्वेदिक इलाज

विजय त्रिवेदी

वैद्य को मंत्रियों ने परख तो लिया पर मदद करने को तैयार नहीं

जयपुर, ३१ अक्तूबर। इस देश की स्वास्थ्य मंत्री किसी बीमार को इलाज के लिए किसी डॉक्टर के पास भेज सकती है, राज्य के राज्यपाल और मुख्यमंत्री अपने किसी जान पहचान के मरीज के लिए भी उस डॉक्टर पर भरोसा करते हैं, पर जब सरकार के इन नुमाइन्दों को सरकारी फाइल पर यह बात कहने का नम्बर आता है तो सबकी बोलती बन्द हो जाती है, कलम रुक जाती है।

अब तक असाध्य रोग कहे जाने वाले रोग कैंसर का इलाज ढूंढा है वैद्य श्री नन्दलाल तिवारी ने और वे बताते हैं कि अब तक सैकड़ों मरीज उनकी दवाई से फायदा उठा चुके हैं। उन्होंने अपनी फाइलों में मुझे वे प्रमाणपत्र बताए, जिनसे पता चलता है कि जिन मरीजों को चिकित्सा संस्थानों के रोग विभागों ने कैंसर घोषित कर दिया और मरीज के ठीक नहीं होने की आशंका व्यक्त की गई हो, उन मरीजों ने श्री तिवारी का सहारा लिया और कुछ महीनों बाद की रपट बताती है कि उनको किसी हद तक फायदा हुआ।

वैद्य श्री तिवारी कैंसर के लिए आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल करते हैं। पिछले दो साल से श्री तिवारी महाराष्ट्र के गोंदिया कस्बे में इलाज करते थे और अब दो महीनों से जयपुर में रह रहे हैं तथा मालवीय नगर में रोजाना सवेरे इलाज के लिए बैठते हैं। उनके रहने का इन्तजाम जयपुर की एक समाजसेवी संस्था ने ही किया है। श्री तिवारी बताते हैं कि उन्होंने पिछले कई सालों की साधना के बाद इस दवा का निर्माण किया और सबसे पहले अपने ही ऊपर इस दवा को इस्तेमाल किया, ताकि उससे होने वाले नुकसान किसी और के शरीर को बर्बाद नहीं करें। अपनी खोज से संतुष्ट होने के बाद ही उन्होंने कैंसर का इलाज शुरू किया और काफी मरीज ठीक भी हुए।

नंदलाल तिवारी

उन्होंने बताया कि जब वे महाराष्ट्र में थे तो महाराष्ट्र सरकार के मुख्यमंत्री, राज्यपाल और स्वास्थ्य विभाग के मंत्री ने उनके पास कई कैंसर मरीज भेजे और वे ठीक हो गए। जब श्री तिवारी ने जनहित को ध्यान में रखते हुए इसे दवाओं में शामिल करने की बात कही तो वे तुरन्त राजी हो गए, लेकिन जब उन्होंने इसकी फाइल बना कर भेजी तो आज तक उसका जवाब नहीं आया। श्री तिवारी ने बताया कि केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्राणी मोहसिना किदवई स्वयं अब तक कई मरीजों को मेरे पास भेज चुकी है और उनका मुझ पर विश्वास है। जयपुर में भी श्री तिवारी के क्लिनिक पर एक व्यक्ति से बात हुई जो किदवई की सलाह पर ही महाराष्ट्र से जयपुर आया हुआ था।

श्री तिवारी इलाज के लिए मरीज को भी नहीं बुलाते, बल्कि उसकी मेडिकल रिपोर्ट और मरीज के रिश्तेदार से उसके बारे में जानकारी प्राप्त करके ही दवा दे देते हैं, ताकि मरीज को लाने-ले जाने में अनावश्यक तकलीफ का सामना नहीं करना पड़े। श्री तिवारी ने कुछ वे सर्टीफिकेट भी मुझे बताए, जिनमें किसी डॉक्टर ने ही अपने रिश्तेदार को उनके पास भेजा था। बीमारी में फायदा मिलने पर कई आभार पत्र भी श्री तिवारी के पास पड़े हैं। श्री तिवारी कैंसर के इलाज के लिए आयुर्वेदिक दवाओं की खुराक बना कर देते हैं, जिनके साथ केवल खटाई का परहेज होता है। श्री तिवारी गरीब मरीजों के रिश्तेदारों को दवा मुफ्त देते हैं वैसे भी अधिकतर मामलों में वे दवा का पैसा मरीज को फायदा मिलने के बाद ही लेते हैं। उनका कहना है कि वे चाहते हैं कि जनहित में यदि इस दवा का उपयोग वृहद स्तर पर किया जा सके तो उनकी इस तपस्या का फायदा होगा। उन्होंने राजस्थान सरकार और उसके स्वास्थ्य विभाग को भी इस बारे में प्रार्थनापत्र लिखा है लेकिन अभी कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है। उनका कहना है कि वे अब यहां की सरकारों से काफी निराश हो चुके हैं और यदि कुछ नहीं हुआ तो विदेश जाकर इस दवा का प्रचार-प्रसार करेंगे। उन्होंने इसके लिए अमेरिका सरकार व कई अन्य विदेशी सरकारों से पत्र व्यवहार कर लिया है और जल्दी इस बारे में फैसला कर लेंगे। लेकिन उनकी इच्छा यह है कि इस देश की गरीब जनता के लिए अगर इस दवा का उपयोग किया जा सके तो वे अपनी साधना को सफल मानेंगे।